6 नवम्बर 2017

हिन्द महासागर में जर्मनी की दिलचस्पी

*डॉ. अमित कुमार

हिन्द महासागर क्षेत्र में जर्मनी की "रणनीतिक तथा कूटनीतिक प्राथमिकता" बढ़ गई है। जर्मनी अब इसे भौगोलिक-रणनीतिक तथा भौगोलिक-आर्थिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण मान रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि जर्मनी अपने सामरिक तथा आर्थिक हितों को देखते हुए क्षेत्रीय ताकतों, अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों तथा इस क्षेत्र के अन्य तटीय देशों के साथ अपने सम्बंध प्रगाढ़ करना चाहता है।

जर्मनी का हिन्द महागार में मूलभूत स्वार्थ है अपने व्यापारिक एवं आर्थिक हितों की सुरक्षा करना। अपने व्यापारिक एवं आर्थिक हित जर्मनी की प्राथमिकता हैं, जिन्हें वह संभव बनाना चाहता है। समुद्री मार्ग की सुरक्षा, आवाजाही की स्वतंत्रता, तटों से लगे जमीनी भाग पर स्थायित्व, राज्य और गैर राज्य शक्तियों का समुद्री क्षेत्र में अनियंत्रण तथा प्राकृतिक आपदा के समय मानवीय मदद एवं पुनर्निर्माण से जुड़ी सहायता द्वारा जर्मनी चाहता है कि एशिया-यूरोप सामुद्रिक व्यापारिक मार्ग, जो कि हिन्द महासागर से गुजरता है, व्यापार के लिए सुरक्षित बना रहे। साथ ही जर्मनी सुनिश्चित करना चाहता है, कि इस व्यापारिक मार्ग तथा महत्त्वपूर्ण choke points जैसे, स्ट्रेट ऑफ मलक्का तथा स्ट्रेट ऑफ हॉरमुज से बाधा रहित व्यापार हो सके। हिन्द महासागर में बिन बाधा के safe और सुरक्षित समुद्री लेन सुनिश्चित करना जर्मनी की प्राथमिकता है, जिसे पूरा करने के लिए वर्तमान में जर्मनी यूरोप के कुछ देशों तथा अन्य पश्चिमी शक्तियों के साथ सहयोग कर रहा है।

बर्लिन में 24 जून 2013 को विदेश मंत्री एमिली हेबर ने विदेश मंत्रालय के दफ्तर में "Perspectives of China, India and Germany in East Africa" विषय पर आयोजित सम्मेलन के प्रारम्भ में अपने व्याख्यान में स्पष्ट करते हुए कहा कि, "इस क्षेत्र में जर्मनी की दिलचस्पी क्यों है? जिस प्रकार हिन्द महासागर के पूर्वी भाग में मलक्का की खाड़ी के द्वारा चीन सम्बद्ध है, उसी प्रकार स्वेज़ नहर

द्वारा पश्चिमी हिस्से से जर्मनी तथा यूरोप के अन्य देश जुड़े हुए हैं। ना तो चीन और ना ही जर्मनी एक कमज़ोर देश हैं, बल्कि दुनिया को सर्वाधिक निर्यात करनेवाले देशों में एक हैं। लिहाजा हम दोनों की अत्यधिक दिलचस्पी इस क्षेत्र में अबाध्य समुद्री मार्ग तथा व्यापार में है।"

हिन्द महासागर क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग पर जर्मनी अपने दृष्टिकोण में विविधता ला रहा है। वो इस क्षेत्र में सुरक्षा तथा सैन्य हितों को अन्य यूरोपीय तथा पश्चिमी देशों के सहयोग से या सहयोग के बिना मजबूत कर रहा है। दुनिया के विभिन्न भागों में सैन्य तैनाती के प्रति अमेरिका की वर्तमान उदासीनता भी हिन्द महासागर में जर्मनी के दृष्टिकोण में बदलाव का एक महत्त्वपूर्ण कारण हो सकता है। मई 2011 में चुनाव प्रचार के दौरान जर्मनी की चांसलर एंजेला मार्केल ने कहा, "हमें (यूरोपीय देशों को) अमेरिका, युनाइटेड किंगडम तथा रूस समेत अन्य पड़ोसी देशों के साथ मित्रवत् सम्बंध बनाने की आवश्यकता है, लेकिन यूरोपीय देशों के रूप में अपना भविष्य स्थिर रखने के लिए हमें युद्ध स्तर पर कार्य करना है"।

हिन्द महासागर के तटीय देशों में अपने सैन्य तथा आर्थिक हितों को मजबूत करने की जर्मनी की वर्तमान कोशिश को हिन्द महासागर की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के प्रयास के रूप में भी देखा जा रहा है। करीब 50 सालों के भीतर हिन्द महासागर क्षेत्र में दूसरी बार ताकत का हस्तांतरण हो रहा है। हाल के वर्षों में अमेरिकी वर्चस्व में कमी तथा भारत एवं चीन के मजबूत समुद्री ताकत के रूप में उभरने से क्षेत्र में ताकत का संतुलन बदल गया है। हिन्द महासागर क्षेत्र में ताकत के बदलते स्वरूप के आलोक में जर्मनी का दृष्टिकोण ब्रिटेन तथा फ्रांस जैसे अन्य यूरोपीय ताकतों तथा अमेरिका जैसे पुराने मित्र के साथ रिश्तों (संतुलन बनाते हुए) तथा मजबूत ताकत के रूप में उभरते हुए चीन के साथ रणनीतिक सहयोग देखना दिलचस्प होगा।

अतीत में हिन्द महासागर क्षेत्र में जर्मनी की सीमित उपस्थिति

1891 में पूर्वी अफ्रीकी देशों - आधुनिक तंजानिया, बुरुंडी, रवांडा में जर्मन उपनिवेशों की स्थापना के साथ हिन्द महासागर क्षेत्र में जर्मनी की उपस्थिति दर्ज हुई। लेकिन उपनिवेशों पर जर्मनी लम्बे समय तक कब्जा नहीं रख पाया। पहले विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी को अपने पूर्वी अफ्रीकी उपनिवेश, ब्रिटेन तथा बेल्जियम के हाथों हार जाना पड़ा। तंजानिया पर ब्रिटेन का तथा बुरुंडी और रवांडा पर बेल्जियम का कब्जा हो गया।

शीत युद्ध के दौरान हिन्द महासागर क्षेत्र में जर्मनी की सैन्य उपस्थिति सीमित थी। हालांकि फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी (FRG) के कब्जे में यहां कोई क्षेत्र नहीं था, फिर भी ये क्षेत्र FRG के लिए महत्त्वपूर्ण था। क्योंकि उसका करीब 40% पेट्रोलियम खाड़ी से आयात होता था। खाड़ी में रूस से संभावित खतरों को देखते हुए 'नेटो ढांचे के भीतर विस्तार के लिए प्रतिबद्धता की नीतियों के अनुसार' FRG ने सैन्य योगदान की संभावनाओं से इंकार नहीं किया। 1980 के दशक में नेटो ने पहली बार इस क्षेत्र में अपनी नौसैनिक टुकड़ी तैनात की, जबकि उसका संविधान नेटो क्षेत्र से इतर सैन्य बल के प्रयोग की अनुमति नहीं देता है। शीत युद्ध के दौरान हिन्द महासागर में ब्रिटेन तथा फ्रांस की तुलना में जर्मन नौसेना की उपस्थिति काफी कम थी।

शीत युद्ध काल समाप्त होने और 2002 में Operation Enduring Freedom प्रारम्भ होने के बाद हिन्द महासागर में जर्मन नौसेना की उपस्थिति थोड़ी बढ़ी। बाद में जर्मन नौसेना एडन की खाड़ी में समुद्री डाकुओं पर काबू पाने के लिए EU-NAVFOR- ATLANTA को सहयोग देने लगी। नेटो के स्थाई समुद्री समूह के हिस्से के रूप में जर्मन जहाजों ने भारतीय हिन्द महासागर स्थित कई देशों के बंदरगाहों का दौरा किया। दक्षिण अफ्रीकी नौसेना के साथ जर्मन नौसेना हर दो साल में संयुक्त अभ्यास करने लगी। अप्रैल 2008 में भारत और जर्मनी की नौसेनाओं ने अरब सागर में तीन दिन का संयुक्त अभ्यास किया। 26 फरवरी 2014 को जर्मन नौसेना की *FGS Hessen* फ्रिगेट तथा दक्षिण कोरिया की *Kang Gam Chan* ने एडन की खाड़ी में संयुक्त अभ्यास किया। जर्मनी डीप सेबर में हुए बहुदेशीय संयुक्त नौसैनिक अभ्यास का भी हिस्सा था, जिसका उद्देश्य संभावित खतरों के लिए तैयार रहना था। इस अभ्यास को सिंगापुर ने सितम्बर 2016 में आयोजित किया था। सिंगापुर ने 2005 तथा 2009 में भी ऐसे ही अभ्यास आयोजित किये थे। 2004 में सूनामी के पश्चात राहत कार्यों में जर्मनी के सप्लाई जहाजों ने इंडोनेशिया के बंदरगाहों पर राहत सामग्रियां पहुंचाईं। जर्मन नौसैनिक जहाज हेसन तथा हैम्बर्ग क्रमश: 2010 तथा 2013 में कई महीनों तक अरब सागर में कार्यरत रहे। जर्मन फ्रिगेड हैम्बर्ग जर्मनी का पहला नौसैनिक जहाज था, जो अमेरिकी कैरियर युद्धक विमानों से लैस था।

जर्मन बंदेश्वर की अफ़ग़ानिस्तान में तैनाती: क्षेत्र में बढ़ता प्रभाव?

ऐसा क्यों हुआ कि घरेलू विरोध के बावजूद जर्मनी सरकार ने अफ़ग़ानिस्तान में बंदेश्वर की तैनाती बनाए रखी? दरअसल, कई लोगों का मानना है कि अफ़ग़ान मुद्दे के अलावा बंदेश्वर की तैनाती कुछ गोपनीय मसलों के लेकर भी कई गई थी, जैसे मध्य-पूर्व से यूरोपीय संघ को तेल उपलब्ध कराने के रास्ते आनेवाली किसी भी आशंकित बाधा को रोकना, उत्तरी हिन्द महासागर में SLoC की सुरक्षा तथा संरक्षण एवं क्षेत्र की जिम्मेदारियों का भार वहन करने में मदद करने की इच्छा। अफ़ग़ानिस्तान सीमा पर जर्मन सेना की उपस्थिति मध्य-पूर्व/फारस की खाड़ी से यूरोपीय संघ को जानेवाली तेल सप्लाई में किसी भी बाधा को दूर करने में मदद करेगी। इसके अलावा सूडान में जर्मन सेना तथा सोमालिया तट एवं एडन की खाड़ी में जर्मन नौसेना की उपस्थिति के द्वारा उत्तरी तथा पश्चिमी हिन्द महासागर से मध्य पूर्व तथा यूरोप को जोड़नेवाली SLoC की सुरक्षा में जर्मनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने की स्थिति में है।

व्यापारिक तथा आर्थिक सहयोग

जर्मनी यूरोप की सबसे बड़ी तथा (जीडीपी के लिहाज से) दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 2016 में जर्मनी ने जी7 देशों में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में ब्रिटेन को पीछे छोड़ दिया था, क्योंकि इसकी अर्थव्यवस्था 2016 में 1.9 प्रतिशत की दर से बढ़ी - जो पिछले पांच वर्षों में सबसे तेज थी। दुनिया के तीसरे सबसे बड़े निर्यातक देश के रूप में जर्मनी अपने देश के उत्पादों के लिए हिन्द महासागर क्षेत्र को तुलनात्मक दृष्टि से अनन्वेषित निर्यात क्षेत्र के रूप में देखता है। विशेषकर जर्मन तकनीकि, औषधीय, हार्डवेयर इत्यादि के क्षेत्र में। 2015 में हिन्द महासागर क्षेत्र के मात्र दो देश, संयुक्त अरब अमीरात (20वां पायदान) तथा सऊदी अरब (25वां पायदान) जर्मनी के शीर्ष 25 निर्यात गन्तव्यों में शामिल थे। भारत का स्थान 27वां था। 2015 में सात प्रमुख IOR देशों के साथ, यानी संयुक्त अरब अमीरात (20वां पायदान), सऊदी अरब

(25वां पायदान), भारत (27वां पायदान), दक्षिण अफ्रीका (28वां पायदान), ऑस्ट्रेलिया (30वां पायदान), सिंगापुर (34वां पायदान) तथा मलयेशिया (38वां पायदान) के साथ जर्मनी का निर्यात क्रमश: 1.23%, 0.84%, 0.82%, 0.81%, 0.71%, 0.56% तथा 0.40% के करीब था (तालिका 2 देखें)। सीमित कच्चे संसाधनों तथा निर्यात पर आधारित अर्थव्यवस्था के साथ जर्मनी अब हिन्द महागाहर के तटवर्ती देशों के साथ अपना सहयोग बढ़ाना चाह रहा है।

हाल के वर्षों में, जर्मनी IOR तथा पूर्वी एशियाई एवं प्रशांत क्षेत्र में वर्तमान व्यापारिक भागीदारी को मजबूत करने का लगातार प्रयास कर रहा है। पूर्वी एशिया तथा प्रशांत महासागर क्षेत्र में हाल के दशकों में जर्मन निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि (तालिका 1 देखें) हुई है। दरअसल, चीन में जर्मन निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। 1990 में, चीन में जर्मन निर्यात का हिस्सा सिर्फ 0.60% था, लेकिन 2015 में यह बढ़कर 5.98% हो गया (तालिका 2 देखें)। इसी तरह, 2015 में जर्मनी के कुल आयात में चीन का हिस्सा 9.77% था, जो 1990 के 1.39% की हिस्सेदारी से कई गुणा बढ़ गया। हाल के वर्षों में कोरियाई गणराज्य को जर्मन निर्यात में काफी वृद्धि हुई है (तालिका 2 देखें)। हाल के वर्षों में पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ भी जर्मनी के व्यापार में काफी मजबूती आई है, जो आमतौर पर हिंद महासागर व्यापारिक मार्ग से होकर गुजरती है। इसके कारण SLOC क्षेत्र की सुरक्षा को लेकर जर्मनी के सरोकार में वृद्धि होगी। 2016-17 में जर्मनी-ईरान के व्यापार में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2016 में ईरान के ख़िलाफ़ अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध हटने के बाद जर्मनी से ईरान को (उपकरणों तथा मशीनों) का निर्यात अचानक बढ़ गया।

तालिका 1

जर्मनी: कुल आयात-निर्यात में प्रतिशत हिस्सेदारी (क्षेत्रवार)

क्षेत्र	वर्ष							
	1990		2000		2010		2015	
	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात
पूर्वी एशिया तथा प्रशांत महासागर	6.91	7.49	7.70	9.18	7.62	6.09	10.44	6.86
मध्य-पूर्व तथा उत्तरी अफ्रीका	3.34	2.72	2.78	2.28	3.73	2.73	4.08	2.20
सब-सहारा अफ्रीका	1.46	1.65	1.02	1.02	1.21	1.24	1.22	1.29
दक्षिणी एशिया	0.63	0.71	0.48	0.77	1.15	1.22	1.01	1.08

स्रोत: WITS (http://wits.worldbank.org/CountryProfile/en/Country/DEU/Year/1990/TradeFlow/Export/Partner/by-region)

तालिका 2

जर्मनी: कुल निर्यात में प्रतिशत हिस्सेदारी (प्रमुख IOR, दक्षिण-पूर्वी एशियाई तथा पूर्वी एशियाई देश)

2015

देश	**निर्यात हिस्सेदारी % में**
चीन	5.98
कोरियाई गणराज्य	1.50
जापान	1.43
संयुक्त अरब अमीरात	1.23
सऊदी अरब	0.84
भारत	0.82
दक्षिण अफ्रीका	0.81
ऑस्ट्रेलिया	0.71
सिंगापुर	0.56
हॉन्ग कॉन्ग	0.50

1990

देश	**निर्यात हिस्सेदारी % में**
जापान	2.71
दक्षिण अफ्रीका	0.78
कोरियाई गणराज्य	0.73
ईरान	0.66
चीन	0.60
ऑस्ट्रेलिया	0.55
सिंगापुर	0.51
हॉन्ग कॉन्ग	0.49
भारत	0.42
सऊदी अरब	0.42

स्रोत: WITS,
http://wits.worldbank.org/CountryProfile/en/Country/DEU/Year/2015/TradeFlow/Export and
http://wits.worldbank.org/CountryProfile/en/Country/DEU/Year/1990/TradeFlow/Export/Partner/ by-country

तालिका 3

जर्मनी: कुल आयात में प्रतिशत हिस्सेदारी (प्रमुख IOR, दक्षिण-पूर्वी एशियाई तथा पूर्वी एशियाई देश)

2015

देश	**आयात हिस्सेदारी % में**
चीन	9.77
वियतनाम	0.85
कोरियाई गणराज्य	0.81
भारत	0.81
मलयेशिया	0.74
सिंगापुर	0.62
दक्षिण अफ्रीका	0.57
थाईलैंड	0.54
बंग्लादेश	0.49
इंडोनेशिया	0.42

1990

देश	**आयात हिस्सेदारी % में**
जापान	5.96
चीन	1.39
हॉन्ग कॉन्ग	0.91
कोरियाई गणराज्य	0.55
दक्षिण अफ्रीका	0.55
सिंगापुर	0.53
भारत	0.45
मलयेशिया	0.42
थाईलैंड	0.40
ऑस्ट्रेलिया	0.39

स्रोत: WITS,
http://wits.worldbank.org/CountryProfile/en/Country/DEU/Year/2015/TradeFlow/Import/Partner/ by-country and
http://wits.worldbank.org/CountryProfile/en/Country/DEU/Year/1990/TradeFlow/Import/Partner/ by-country

तालिका 4

जर्मनी: दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा पूर्वी एशिया में विदेशी निवेश
(मीलियन अमेरिकी डॉलर में)

क्षेत्र	वर्ष				
	2001	2005	2010	2011	2012
दक्षिण एशिया *	227	909	3,659	2,772	2,399
दक्षिण-पूर्वी एशिया	1,070	-15	2,473	3,375	1,132
पूर्वी एशिया	1,086	5,133	8,419	11,320	7,080

स्रोत: http://unctad.org/Sections/dite_fdistat/docs/webdiaeia2014d3_DEU.pdf.

** इस्लामिक ईरान गणराज्य पर UNCTAD के आंकड़े भी दक्षिण एशियाई क्षेत्र में शामिल।*

संसाधनों में दिलचस्पी

तेल तथा गैस जर्मनी में सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत हैं, जिनमें कुल प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति का (टीपीईएस) 32% भाग तेल तथा 22% प्राकृतिक गैस है। हालांकि, जर्मनी स्वयं घरेलू तेल तथा प्राकृतिक गैस का कम ही उत्पादन करता है, एवं आयात पर निर्भर करता है। 2013 में जर्मनी में रूस से सबसे अधित तेल आयात किया गया, जिसके बाद ब्रिटेन, नॉर्वे, लीबिया तथा नाइजीरिया का स्थान था। इसी वर्ष जर्मनी को प्राकृतिक गैस का भी सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता रूस था। जहां तक फारस की खाड़ी क्षेत्र का प्रश्न है, तो 1990 के दशक में जर्मनी को प्रमुख तेल निर्यातकों में ईरान शामिल था, लेकिन अब जर्मनी में ईरान से तेल का आयात पहले की तुलना में काफी कम हो गया है। ऐसा माना जा रहा है, कि जर्मनी के लिए निकट भविष्य में फारस खाड़ी का क्षेत्र रूस से आयातित तेल के विकल्प के रूप में फिर से उभर सकता है।

हिंद महासागर की गहराईयों में स्थित समुद्री संसाधनों में जर्मनी की भी रुचि है। जर्मनी हिन्द महासागर में सल्फाइड का अन्वेषण करना चाहता है। 2015 में हिन्द महासागर में सल्फाइड की खोज के लिए जर्मनी को अंतरराष्ट्रीय सीबेड अथॉरिटी द्वारा अनुबंध मिला था। आनेवाले वर्षों में गहरे समुद्री खनन कारोबार में शामिल जहाजों की सुरक्षा तथा हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा व्यवस्था में जर्मनी की भागीदारी की उम्मीद है। एक बार समुद्र तल में खनिज की खोज शुरू हो जाने पर (संभवत: 2019 के बाद), बहुमूल्य खनिज ले जानेवाले समुद्री जहाजों की सुरक्षा के लिए जर्मनी, हिंद महासागर के तटीय देशों के साथ सुरक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए अनुबंध कर सकता है।

जर्मनी से हथियारों का निर्यात

प्रमुख हथियारों के निर्यातक के रूप में वैश्विक हथियारों के निर्यात में जर्मनी की हिस्सेदारी 5.6% है। हालांकि 2016 में हथियारों के निर्यात में भारी वृद्धि के बावजूद अन्य प्रमुख हथियार निर्यातक देशों की तुलना में हाल के वर्षों में जर्मन हथियारों के निर्यात में भारी कमी आई है। फरवरी 2017 में स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, जर्मन हथियारों के निर्यात में 2007-11 के पांच वर्षों

की तुलना में 2012-16 के पांच वर्षों में 36% की कमी आई है"। अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस तथा जर्मनी हथियारों के शीर्ष पांच निर्यातक देश हैं, तथा वैश्विक हथियारों के निर्यात में उनकी हिस्सेदारी 74% है। सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, मलयेशिया, ब्रुनी, भारत, आस्ट्रेलिया तथा पाकिस्तान जर्मन हथियारों के प्रमुख आयातक देश हैं। अगर जर्मनी की सरकार नेटो के दायरे से बाहर हथियार निर्यात करने के नियमों को आसान बनाती है, तो हिंद महासागर क्षेत्र जर्मन हथियारों के निर्यात के लिए एक प्रमुख गन्तव्य के रूप में उभर सकता है।

समुद्री डाकू विरोधी अभियान

जर्मनी ऑपरेशन अटलांटा के माध्यम से सोमालिया के तट पर समुद्री डाकू विरोधी अभियान में शामिल रहा है। 2008 में स्थापित ऑपरेशन अटलांटा (EU-NAVFOR-ATLANTA), यूरोपीय संघ के देशों की नौसेनाओं से जुड़ा एक संयुक्त अभियान था। प्रारंभ में, EU-NAVFOR-ATLANTA का लक्ष्य "सोमालिया जानेवाले अफ्रीकी संघ मिशन के जहाजों तथा संयुक्त राष्ट्र के विश्व खाद्य कार्यक्रम के जहाजों को सुरक्षा देना था, लेकिन बाद में एडेन की खाड़ी, अरब प्रायद्वीप तथा पूर्वी अफ्रीका में समुद्री डाकुओं से मुकाबला करना भी इसकी जिम्मेदारी बन गई"। हॉर्न ऑफ अफ्रीका क्षेत्र में यूरोपीय संघ के बहुराष्ट्रीय देशों की नौसेना की उपस्थिति से रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण तथा समुद्री डकैती से प्रभावित व्यापारिक समुद्री मार्ग की स्थिति में सुधार हुआ एवं यूरोपीय संघ के आर्थिक हितों को सुरक्षित करने में मदद मिली। EU-NAVFOR-ATLANTA में जर्मन भागीदारी के लिए बंडेस्टैग की मंजूरी से स्पष्ट है कि सोमालिया में समुद्री डकैती की घटनाओं को न सिर्फ क्षेत्रीय मानवीय समस्या माना जाता है, बल्कि यहां नागरिक जहाजों की सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय एकता तथा सबसे महत्वपूर्ण जर्मनी के आर्थिक हितों के लिए भी खतरे के रूप में देखा जाता है। 17 फरवरी 2008 को ESDP “अटलांटा” अभियान का पहला विन्दु पढ़ते हुए जर्मनी के विदेशी मंत्री फ्रैंकवाल्टर स्टीनमेयर ने कहा-, "मैंने कारण स्पष्ट किया है कि आखिर क्यों फेडरल सरकार ने बंडेस्टैग से यूरोपीय संघ के नेतृत्व वाले अटलांटा अभियान में बंदेश्वर की भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा है। इस प्रकार जर्मनी तथा यूरोपीय संघ सोमालिया की जनता को क्षेत्र की सुरक्षा तथा अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण संकेत दे रहे हैं।

अटलांटा अभियान के अतिरिक्त, जर्मनी ने उत्तरी हिन्द महासागर में संयुक्त कार्यबल CTF-150 तथा CTF-151 के हिस्से के रूप में भी सुरक्षा कार्यों का संचालन किया है। हालांकि CTF-150 का संचालन आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक युद्ध से जुड़ा हुआ था, तथा आतंकवादियों को रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण अफ्रीका के हॉर्न के आसपास पहुंचने से रोक दिया गया था, लेकिन बाद में एडन की खाड़ी तथा सोमालिया से सटे समुद्र में समुद्री डाकुओं के ख़िलाफ़ कई अभियान किये गए थे। जनवरी 2009 में गठित CTF-151 एडेन की खाड़ी तथा सोमालिया के पूर्वी तट पर समुद्री डाकुओं के हमलों से निपटने के लिए एक बहुराष्ट्रीय नौसैनिक टास्क फोर्स है। इस अभियान को "UNSCRs के 1816, 1838, 1846, 1851 और 1897” के अधिकार के तहत समुद्री डाकुओं के ख़िलाफ़ कार्रवाई का अधिकार मिला है।

जर्मन तकनीक: क्षेत्र में प्रभुत्व का साधन

जर्मन तकनीक, विशेषकर समुद्री प्रौद्योगिकी हिंद महासागर में भविष्य में सहयोग बढ़ाने के लिए एक माध्यम का कार्य कर सकती है। आपदा राहत प्रौद्योगिकी, समुद्री इंजीनियरी, जल के अंदर की तकनीक, पवन ऊर्जा, कंटेनर शिपिंग आदि में जर्मनी को तकनीकी बढ़त प्राप्त है। जर्मनी IOR देशों के साथ साझेदारी विकसित करने तथा क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए समुद्री प्रौद्योगिकी को माध्यम के रूप में उपयोग कर सकता है। जर्मनी पहले ही इंडोनेशिया में आपदा राहत सहायता प्रौद्योगिकी की सहायता से आपसी विश्वास में वृद्धि करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर चुका है।

जर्मनी विशाल क्रूज जहाजों के निर्माण तथा निर्यात में अग्रणी है। 2015 में जर्मनी से क्रूज जहाजों का निर्यात 1.9 बीलियन अमेरिकी डॉलर था, जो वैश्विक क्रूज जहाजों के निर्यात का 35.5% था। हिन्द महासागर में क्रूज पर्यटन अब भी तुलनात्मक दृष्टि से उपेक्षित है। सम्भव है कि आगामी वर्षों में इसपर ध्यान दिया जाए। IOR में क्रूज पर्यटन को प्रोत्साहन जर्मन क्रूज जहाज उद्योग को नया निर्यात गंतव्य प्रदान कर सकता है। इसके अलावा जर्मन शिपयार्ड - उन्नत गश्त नौकाओं, मछली पकड़ने वाली नौकाओं, बड़ी नौकाओं, शोध जहाजों के उत्पादन तथा तेल और गैस खनन जहाजों एवं अपतटीय पवन ऊर्जा उद्योगों के लिए बाज़ार तलाशने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। हिन्द महासागर में दीर्घकालीन मत्स्य आधारित अर्थव्यवस्था के विकास के साथ, जर्मनी के उन्नत शोध जहाजों, गश्त नौकाओं, मछली पकड़ने की नौकाओं, तेल और गैस खनन जहाजों तथा अपतटीय पवन ऊर्जा उद्योगों, बड़ी नौकाओं आदि की मांग बढ़ सकती है।

क्रूज जहाजों तथा उससे जुड़ी वाणिज्यिक सामग्रियों के अतिरिक्त जर्मनी ने नौसैनिक जहाजों का भी निर्माण तथा निर्यात किया है। जर्मनी पनडुब्बियों का निर्यातक देश है तथा उसे पहला ऑर्डर 1962 में ही मिला था। NTI के आंकड़ों के मुताबिक जून 2011 तक जर्मनी को 106 ऑर्डर प्राप्त हो चुके थे, जिनमें पनडुब्बियां (67) तथा नौकाएं एवं उनसे सम्बंधित उपकरण (39) शामिल थे।

मानवीय क्रियाकलापों द्वारा सद्भावना

जर्मनी, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में सक्रियतापूर्वक मानवीय मुद्दों को सम्बोधित कर रहा है। हाल के वर्षों में इंडोनेशिया, श्रीलंका तथा सोमालिया में जर्मनी सक्रिय मानवीय अभियानों में शामिल रहा है। हाल के दशक में इंडोनेशिया में जर्मनी के मानवीय प्रयास हिंद महासागर क्षेत्र में सद्भावना पैदा करने में सफल हुए हैं। 2004 में सूनामी के बाद जर्मनी ने क्षेत्र में सुनामी की चेतावनी प्रणाली विकसित करने के लिए 45 मीलियन यूरो की वित्तीय मदद दी थी। जर्मनी सरकार द्वारा स्थापित जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जिओसाइंसेज़ (GFZ) ने जर्मन-इन्डोनेशिया सूनामी अर्ली वार्निंग सिस्टम (GITE) विकसित किया, ताकि इंडोनेशिया को समय रहते सूनामी की चेतावनी मिल सके।

जर्मनी यूरोपीय संघ के देशों तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ मिलकर श्रीलंका में चल रहे पुनर्निर्माण तथा सामंजस्य प्रक्रिया में मदद दे रहा है। जर्मनी से श्रीलंका को अधिकांश मानवतावादी सहयोग अंतरराष्ट्रीय संगठनों के द्वारा दिये जा रहे हैं, जिनका कार्यान्वयन जर्मन विकास सहयोग तथा जर्मन ग़ैर सरकारी संगठन कर रहे हैं। इनके अलावा जर्मन सरकार ने 2015, 2016 और 2017 में बाढ़ तथा भूस्खलन के बाद राहत कार्यों के लिए श्रीलंका को काफी मानवीय सहायता प्रदान की है।

जर्मनी सोमालिया को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। नैरोबी में जर्मनी के संघीय गणराज्य दूतावास द्वारा प्रदान की गई जानकारी के अनुसार सोमालिया को यूरोपीय संघ की मदद का लगभग 27% हिस्सा जर्मनी द्वारा दिया जा रहा है। जर्मन सरकार सोमालिया में विभिन्न मानवीय परियोजनाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों को लगभग 4-5 मीलियन यूरो देती है। ये परियोजनाएं मुख्य रूप से एडवेंटिस्ट डेवलपमेंट एंड रिलीफ एजेंसी (ADRA), जर्मन वेलथैंफरेल्फ (जर्मन एग्रो एक्शन), इंटरनेशनल कमेटी ऑफ द रेड क्रॉस (ICRC), विश्व खाद्य कार्यक्रम तथा वर्ल्ड विजन द्वारा संचालित हैं। मई 2017 में, जर्मनी ने सोमालिया को 70 मीलियन यूरो की मदद देने का भरोसा दिया है तथा अफ्रीकी देश में सूखे से निपटने के लिए इस राशि को दोगुना करने पर विचार कर रहा है।

आपदा राहत प्रबंधन तथा मानवीय मदद के लिए आधुनिक जर्मन तकनीक की भारी मांग है, जो जर्मनी को इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियां तथा प्रभाव बढ़ाने में मदद दे सकता है। साथ ही आपदा प्रबंधन कार्यों में भी भारी मदद मिल सकती है।

भारत-जर्मनी समुद्री सहयोग को मजबूत बनाना

भारत-जर्मनी संबंध 2001 में रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर के बाद से विस्तृत तथा मजबूत हो रहे हैं। 2011, 2013, 2015 तथा 2017 में अंतर-सरकारी परामर्श के चार दौर ने रिश्तों को और मजबूती प्रदान की है। भारत-जर्मनी द्विपक्षीय सहयोग के प्रमुख मुद्दों में 'समुद्री सहयोग' एक है। दोनों देश द्विपक्षीय 'समुद्री सहयोग' का दायरा विस्तृत करने पर विचार कर रहे हैं। समुद्री हितों से जुड़े सरोकार जैसे समुद्री मार्गों की सुरक्षा, नेविगेशन की स्वतंत्रता, समुद्री मार्गों से सुरक्षित आवागमन, समुद्री डकैतियों पर लगाम, मछली मारने पर आधारित अर्थव्यवस्था का विकास आदि समुद्री सहयोग के क्षेत्र में दोनों देशों को करीब ला रहे हैं।

चूंकि दोनों देश अंतरराष्ट्रीय जल में नेविगेशन की स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध हैं, दोनों अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार आवागमन का अधिकार, समुद्री संप्रभुता तथा समुद्र से जुड़े अन्य अधिकार सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं। 30 मई, 2017 को बर्लिन में चौथे भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (IGC) में जारी संयुक्त वक्तव्य में कहा गया: "दोनों देशों ने अंतरराष्ट्रीय जल में नेविगेशन की स्वतंत्रता, आवागमन का अधिकार तथा अन्य समुद्री अधिकारों तथा दायित्वों के समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन एवं अंतरराष्ट्रीय कानून के अन्य सिद्धांतों के अनुसार रेखांकित किया है। दोनों नेताओं ने हिंद महासागर क्षेत्र में मत्स्य आधारित अर्थव्यवस्था की सुरक्षा, स्थिरता, संपर्क तथा दीर्घकालीन विकास को विशेष महत्व दिया है"।

शीत युद्ध के दौरान भारत तथा जर्मनी के बीच समुद्री सहयोग बेहद कम था। इसका दायरा जर्मनी से कुछ समुद्री प्रौद्योगिकी की आपूर्ति तक ही सीमित था। शीत युद्ध के समय भारत-जर्मनी के बीच पनडुब्बी सौदा सबसे महत्वपूर्ण रक्षा सौदों में से एक था। हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा के लिए अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी और यूरोपीय देशों पर जर्मनी की निर्भरता एवं नेटो के दायरे से अधिक सेना का प्रयोग न करने के कानून ने जर्मन नौसेना को नेटो या बहुराष्ट्रीय सहयोग के दायरे में रहने को मजबूर किया।

उन्नत समुद्री प्रौद्योगिकी में जर्मनी की दक्षता तथा भारत के लिए ऐसी तकनीक की आवश्यकता एक-दूसरे के हितों को पूरा करती है। दोनों देश ज्वाइंट हाई टेक्नोलॉजी पार्टनरशिप ग्रुप (HTPG) के माध्यम से समुद्री प्रौद्योगिकी समेत उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए क्षेत्रों की पहचान कर रहे हैं। 30 मई 2017 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की जर्मनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी तथा जर्मन चांसलर एंजेला मार्केल दोनों ने दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग बढ़ाने के लिए HTPG के प्रयासों का स्वागत किया।

भारत तथा जर्मनी पवन ऊर्जा के क्षेत्र में आपसी सहयोग करना चाहते हैं। इस क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए दोनों देशों ने 17 अक्टूबर 2017 को चेन्नई में एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। ये MOU भारत तथा जर्मन कंपनियों को एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव तथा ज्ञान साझा करने में मदद करेगा। जर्मनी के लिए भारत अपतटीय और तटवर्ती पवन ऊर्जा में निवेश के लिए एक विशाल बाजार है। दूसरी ओर भारत को जर्मन तकनीक तथा पवन ऊर्जा में विशेषज्ञता रखनेवाली जर्मन कंपनियों से लाभ होगा।

भारत के 'लॉजिस्टिक्स हब' तथा 'क्रूज डेस्टिनेशन' के रूप में उभरने से जर्मन निवेश आकर्षित होगा। चुंकि भारत के जहाजरानी तथा पर्यटन मंत्रालय देश में क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कार्य योजना तैयार कर

रहे हैं, लिहाजा जर्मन क्रूज़ जहाज निर्माताओं के लिए भारत नया निर्यात गंतव्य बन सकता है। भारतीय क्रूज़ जहाज पर्यटन क्षेत्र को जर्मन अनुभव, क्रूज शिपिंग तथा मार्केटिंग के ज्ञान से भी फायदा हो सकता है।

भारतीय तथा जर्मन कंपनियां भारत में पोर्ट-रेल संयोजन विकसित करने की दिशा में भी सहयोग कर रही हैं। भारत के 25 बंदरगाहों में रेल-बंदरगाह संयोजन तथा पोर्ट-रेल की सुविधा के आधुनिकीकरण के लिए, भारतीय पोर्ट रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड और जर्मनी की डीबी इंजीनियरिंग एंड कंसल्टिंग कम्पनी ने मुंबई में "मेरिटाइम इंडिया सम्मेलन 2016" के दौरान एक समझौते (MOU) पर हस्ताक्षर किए। समुद्री परिवहन के क्षेत्र में भारत-जर्मन सहयोग लगभग चार दशक पुराना है। लगभग 41 साल पहले, 15 जून 1966 को दोनों देशों के बीच समुद्री परिवहन से जुड़ा एक समझौता किया गया था।

रक्षा/सैन्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जर्मन-भारत सहयोग कोई नई बात नहीं है। अतीत में जर्मनी ने भारत को सेना से जुड़ी कई प्रौद्योगिकियों उपलब्ध कराई हैं तथा कई जर्मन रक्षा कंपनियों ने दिल्ली में अपनी शाखाएं खोली हैं। उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी में भारत, जर्मनी की क्षमता स्वीकार करता है। 30 मई 2017 को बर्लिन में चौथी द्विपक्षीय वार्ता के पश्चात जारी संयुक्त वक्तव्य में प्रधान मंत्री मोदी तथा चांसलर मार्केल ने "HTPG के प्रयासों का स्वागत किया जिसमें उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए विशिष्ट अवसरों की पहचान हुई। इनमें “मेक इन इंडिया” कार्यक्रम के अंतर्गत विनिर्माण क्षेत्र में कौशल विकास की प्राथमिकता वाले क्षेत्रों तथा रक्षा और मशीन टूल्स विनिर्माण के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के साथ समुद्री प्रौद्योगिकी एवं मत्स्य आधारित अर्थव्यवस्था के विकास में सहयोग शामिल हैं"।

आपदा प्रबंधन में भारत-जर्मनी के बीच सहयोग भी इस क्षेत्र के लिए लाभदायक होगा। भारत तथा जर्मनी ने आपदा राहत सहायता सुचारू रूप से उपलब्ध कराने में अपनी क्षमता कौशल/पहले ही साबित कर दिया है। आपदा जोखिम मूल्यांकन तथा प्रबंधन में जर्मनी की उन्नत तकनीक आपदा तथा राहत कार्य के संचालन में नुकसान कम करने में मददगार साबित होगा।

हिन्द महासागर क्षेत्र में जर्मनी की दिलचस्पी कुछ समय से बढ़ रही है। अपने आर्थिक तथा व्यापारिक हितों की रक्षा तथा हिन्द महासागर की राजनीति में एक प्रमुख साझीदार बनने की अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए जर्मनी से तटवर्ती देशों, क्षेत्रीय ताकतों तथा क्षेत्र से इतर ताकतों के साथ अधिक द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सुरक्षा एवं आर्थिक सहयोग की उम्मीद की जाती है। समुद्री सुरक्षा तथा आर्थिक हितों को सम्मिलित करने से भारत और जर्मनी के लिए समुद्री क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना तथा मजबूत करना आवश्यक है। 30 मई 2017 को चौथे भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श के दौरान जारी संयुक्त वक्तव्य ने दोनों देशों के बीच हिंद महासागर में नेविगेशन की स्वतंत्रता (अंतरराष्ट्रीय जल में), सुरक्षा, स्थिरता तथा दीर्घकालीन विकास सुनिश्चित करने की संभावना पर बल दिया है।

****

**डॉ. अमित कुमार, विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में शोध अध्येता हैं।*
डिस्क्लेमर: आलेख में व्यक्त विचार शोध अध्येता के व्यक्तिगत विचार हैं तथा परिषद के विचारों को प्रतिबिम्बित नहीं करते।